International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493; Impact Factor: RJIF 5.46
Received: 21-10-2020; Accepted: 06-11-2020; Published: 24-11-2020
Volume 2; Issue 4; 2020; Page No. 41-44

सरहपाद का दोहाकोश और राहुल सांकृत्यायन

संजय कुमार
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

प्रस्तावना

महापंडित राहुल संकृत्यायन हिंदी के अक्षय शोधार्थी थे उन्होंने जब से लेखन कार्य आरम्भ किया तब से लेकर चेतना - शक्ति खोने तक अपना अन्वेषण कार्य जरी रखा | उन्होंने हिंदी साहित्य के विभिन्न विधाओं को साधन के रूप में उपयोग किया है | उन्हें मूल रूप से हिंदी साहित्य एवं इतिहस में अपार श्रध्दा थी इतिहास को जानने की अतृप्त प्यास उन्हें सदैव वेचैन किए रहता था राहुल सच्चे और अबतक के सबसे बड़े शोधार्थी थे राहुल संकृत्यायन केवल अपनी शौक की पूर्ति के लिए संसार का भ्रमण नहीं करते थे बल्कि किसी-न- किसी तथ्य और सत्य की खोज में संसार में भटकते रहते थे कई वर्षों के पश्चात राहुल संकृत्यायन जब अपने पैत्रिक ग्राम कनैला पहुँचे| लोगों को लगा कि अब ये अपना घर बसाने वापस गॉव आ गए हैं | कुछ शरारती लोगों ने उनकी पूर्व पत्नी को लाकर उनके सामने खड़ा कर दिया | राहुल संकृत्यायन उन्हें देखकर मन में केवल इतना कह सके की मेरी इतिहास एवं साहित्य व्यसन ने इस महिला का जीवन बर्बाद कर दिया | परन्तु इसका दोष राहुल ने स्वंम पर नहीं लेकर भारतीय सामाजिक व्यवस्था को दिया | उनका स्पष्ट मानना था कि यह पहली विवाह समाज ने उन्हें जबरन करवाया था इसीलिए इसका खामयाजा समाज को ही भुगतना पड़ेगा |खैर राहुल जी ने अपनी पहली परिणिता को उद्धार तो नहीं किया परन्तु अपने गाँव का इतिहास लिखकर गाँव का कल्याण अवश्य कर दिए | राहुल जी गाँव के प्राचीन तालाब बड़ी पोखर का पानी निकलवा कर मौर्यकालीन ईंट सहित अनेक पूरा तात्विक महत्व की वस्तुएँ प्राप्त किए | सयैद बाबा के डीह जिसे हिंदू-मुस्लिम सभी पूजते थे उकेर कर इतिहासिक साक्ष्य प्राप्त किए | तदुपरांत कनैला का इतिहास ई.पू. 1300 से लेकर 1957 तक की सम्पूर्ण विवरण को ऐतिहासिक साक्ष्य के साथ लिख दिए | हमारे भारतवर्ष में इतिहासकार भी किसी अन्य विदेशी इतिहासकार के एतिहसिक कृतियों को आधार मानकर अन्वेषण करते हैं परन्तु राहुल संकृत्यायन इतिहास की वास्तविक वस्तुओं, साक्ष्य, अवशेषों को देखे बिना किसी ग्रन्थ का प्रणयन नहीं करते थे |

यह कितनी विडम्बना है कि हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा में राहुल संकृत्यायन का नाम बहुत बाद में लिया जाता है अधिकांश हिंदी के छात्र राहुल के हिंदी इतिहास में योगदान से अनभिग हैं| आपको जानकर आश्चर्य होगा कि राहुल संकृत्यायन केवल मन और आत्मा की शांति के लिए बौद्ध स्वीकार नहीं किए थे बल्कि बौद्ध धर्म स्वीकार कर उन्हें हिंदी के आरम्भिक साहित्यकार को ढूंढने में मद्द मिलने वाला था| हम जानते हैं कि सातवीं आठवीं शताब्दी में भारत दोनों स्तरों पर संक्रांति काल था धर्म और भाषा | अतः राहुल अपने प्राचीन पाली, प्राकृत के कवियों की मौलिक कृतियाँ ढूंढने का कठिन कार्य आरम्भ कर दिया | उन्होंने अनेक बार तिब्बत की यात्रा कर सरहपाद सहित

अन्य प्राकृत कवियों की बहुमूल्य हस्तलिखित कृतियाँ प्राप्त किए जिसमे सबसे महत्वपूर्ण सिद्ध सरहपाद का 'दोहा-कोश' भी सामिल है| राहुल संकृत्यायन ने दोहा कोश को व्यवस्थिक कर बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् ,पटना के सहयोग से इस ग्रन्थ को प्रकाशित करवाए | इसके विषद एवं अतिमहत्वपूर्ण भूमिका में राहुल संकृत्यायन जी लिखते है, सरहपाद का काल, भारतवर्ष के इतिहास में कई दृष्टी से अत्यन्त महत्वपूर्ण है इस महान विचारक, कवि और सन्त-सिद्ध के प्रादुर्भाव से एक नये युग की सूचना मिलती हैं |- [1]

परंतु प्रश्न उठता है जब बौद्ध धर्म का आरम्भ भारतवर्ष से हुआ | सम्पूर्ण एशिया में बौद्ध धर्म प्रचारित हुए | मध्य एशिया बुखारा आदि तो का केंद्र बन गया था तुर्कीस्तान मध्य एशिया में बौद्ध धर्म का गढ़ था, जहाँ दत्ता मित्र-आधुनिक तेमिर्ज और बलख अपने महान विहारों तथा विद्वानों के लिए मशहूर थे |- भूमिक-दोहा कांश- तो फिर भारत से बौद्ध तिरोहित क्यों हो गए? इस प्रश्न का उत्तर देने में ब्रह्मण भाष्यकारों ने बहुत प्रपंच रचा है चूँकि बौद्ध धर्म हिंदू कर्मकाण्ड की प्रतिक्रिया स्वरूप पल्लवित पुष्पित हुए थे इसीलिए वे मन से कई बात गढ़ लिए है और यहाँ तक कह देते है कि शंकराचार्य ने अपने प्रभाव से बौद्धों को भारत से धकेल कर बाहर कर दिया | परंतु राहुल सांकृत्यायन इन कोडी और मनगढ़ंत बातों को मानने वाले कहाँ थे उन्होंने इन तथ्यों पर से पर्दा हटाने के लिए ई.वी. सन् से लेकर आठवीं नवी शताब्दी के इतिहास को खंगालना आरम्भ कर दिया| यह तो सद्यः स्पष्ट है कि कला - संस्कृति पर भी राजनीतिक स्थिरता -अस्थिरता का सीधा असर होता है राहुल संकृत्यायन तत्कालीन राजनीतिक स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहते है ,वर्धन वंश के राजा हर्षवर्धन प्राचीन भारत के अंतिम दिग्विजयी सम्राट थे |42 वर्ष के सुदीर्घ, शांत और समृद्ध शासन के बाद जब 648 ई . में उनका निधन हुआ तो उनका सम्राज्य जल्दी ही छिन्न - भिन्न होकर इतना कमजोर हो गया की अपने अपमान का बदला लेने के लिए चीनी राजदूत ने थोड़ी सी तिब्बती - नेपाली सेना की मदद से हर्ष की राजधानी पर अधिकार ज़माने वाले अर्जुन को न केवल हराया ही वल्कि उसे वंदी बनाकर चीन ले गया | आगे 100 का समय टुकड़े-टुकड़े में बटे कान्यकुब्ज साम्राज्य के पारस्परिक कलह और पतन का इतिहास हमारे लिए अत्यंत अपरिचित सा है | एक शताब्दी बीतने पर हम भारत में तीन महा शक्तियों का उदय होते देखते है | (1) पूर्व में यशश्वी पाल-वंश हर्ष के साम्राज्य के पूर्व वाले भाग पर अपना दृढ़ शासन स्थापित करता है,और वहाँ मतस्य न्याय का अंत कर हिंदू काल के अंत तक रहने वाले एक राजवंश की नीव डालता है | (2) दक्षिणपंथ - जिसे जितने का असफल प्रयत्न हर्ष ने किया था वहाँ प्रचंड राष्ट्रकूट का शासन देखने में आता है और (3) राजपूताने के भिन्न्माल या श्रीमाल के गुर्जर-प्रतिहार अपनी शक्ति बढ़ाते यमुना और गंगा के किनारे तक पहुचने की कोशिश करते है | [2] इस प्रकार प्राचीन भारत वर्ष में अनेक संघर्ष के अवसर आए है कई बार केन्द्रीय सत्ता मजबूत हुई है एवं बिखंडित भी हुई है ऐसी ही अस्थिर समय में सरहपाद का आगमन होता है जिन्हें हिंदी के आदि कवि होने का गौरव प्राप्त है स्वयं राहुल संकृत्यायन जी लिखते है, कान्यकुब्ज के भाग्य का फैसला अभी नहीं हो पाया था जबकि सरहपाद ने अपने कर्म क्षेत्र में पैर रखा था | उपर वर्णित तीनों शक्तियों के पास ही भारत का भाग्य था इनके मैदान में आने से पहले ही भारत से बाहर अपने प्रभाव को फैलती एक विश्व शक्ति पश्चिम की ओर से भारत की ओर बढ़ती चली आ रही थी |यह थी अरब या इस्लाम की शक्ति | [3] यद्यपि इस समय भी हषवर्धन कान्यकुब्ज में विराजमान थे |परन्तु इस दौरान अरब की सेना ने ईरान के साथ-साथ कई महा-शक्तिओं को ध्वस्त कर चुका था सबसे बड़ी बात कि ये इस्लामी शक्ति केवल शासन परिवर्तन नहीं करते थे वल्कि वहाँ की संस्कृति

को भी बर्वाद कर देना चाहते थे हमें यह नही भूलना चाहिए उस समय करीब -करीब सम्पूर्ण एशिया में बौद्ध धर्म सर्व स्वीकार्य एवं मान्य हो चुका था अफगानिस्तान में तो अनेक मठ एवं बौद्ध मूर्तियाँ भी थी वह सबका सब अरबी - इस्लामी सेना का भेंट चढ़ गया | पहले ही बताया जा चुका है कि तुखारिस्तान, तेमिर्ज और बलख मध्य एशिया के प्रमुख बौद्ध विहारों एवं विद्वानों के लिए प्रसिद्ध रहा है जब इस्लामी आक्रमणकारी अत्यंत प्रचंड हो गए तो तथागत के भिक्षा-पात्र को बलख में जाकर रखा गया इसी से बौद्ध धर्म के लिए इस स्थान का महत्व मालूम हो सकता है | [4] मध्य-एशिया में हो रहे खूनी संघर्ष से भारत के प्राचीन बौद्ध शिक्षा केंद्र नालंदा परिचित था क्योंकि नालंदा में मध्य एशिया के अनेक भिक्षुक अध्ययन करते थे वे लोग इस्लामी आक्रमणकारियों की क्रुरता अपनी आँखों से देख चुके है |

आठवी सताब्दी के आते-आते इस्लामी सैनिक सिन्धु तक पहुँच गई थी और इन क्षेत्रों पर अपना अधिकार जमा लिया था आगे की ऐतिहासिक घटनाएँ सभी छात्रों और अध्येताओं को पता ही है| जब इस्लामी सैनिक का अधिपत्य भारत में होने लगा था तब तक सरहपाद परायण कर चुके थे | अतः इससे सिद्ध होता है कि सरहपाद आजीवन भारत में रहे | और अनेक काव्य ग्रन्थ तात्कालिक देश भाषा में लिखे |सरहपाद से पूर्व भी कई कवियों ने देशी भाषा में काव्य-सृजन किए जिसमे वानभट्ट के परम मित्र इशान कवि भी हुए थे |परन्तु न तो उनकी लेखनी प्रकाश में है और ही हस्तलिखित ग्रन्थ ही प्रकाश में है |इसीलिए इशान कवि को प्रथम कवि नहीं माना जा सकता है इसीलिए ईशान कवि को प्रथम कवि नहीं माना जा जकता है | सरहपाद के काव्य ग्रन्थ राहुल संकृत्यायन ने तिब्बत के आपने यात्रा में प्राप्त किए है | सारहपद केवल एक साधारण बौद्ध ही नहीं थे बल्कि उनकी गणना प्रमुख सिद्धों में होती है | राहुल संकृत्यायन का मानना है कि बिहार- बंगाल, के नालंदा और विक्रमशिला और जगतला के महँ विहारों के तुर्कों द्वारा ध्वस्त कर दिये जाने पर भारतीय संघराज शक्याश्रीभद्र के साथ शरणार्थियों की जो मंडली तिब्बत पहुची थी उसमें शक्याश्रीभद्र के शिष्य तथा अपनी भाषा के कवि विनय श्री भी थे विनय श्री तिब्बत के सस्क्य बिहार में बहुत समय तक रहे | शायद वह लौटकर भारत न आ सके | [5] और विनय श्री के साथ ही अनेक प्राकृत एवं संस्कृत की हस्तलिखित कृतियाँ सस्क्य विहार में ही छूट गया | इन ग्रंथों को कई शताब्दी के पश्चात राहुल संकृत्यायन ने अपने तिब्बत प्रवास में वहाँ के मठ से प्राप्त किए | सारहपद का दोहा-कोश भी वही से प्राप्त हुआ जिसे बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्- पटना के सहयोग से प्रकाशित किया गया| पटना संग्रहालय में आज भी अनेक ऐतिहासिक महत्व के वस्तु उपलब्ध है जिसे राहुल संकृत्यायन ने से तिब्बत से प्राप्त किए थे |

कहना न होगा राहुल सांकृत्यायन जैसे जन्मजात शोधार्थी कई शताब्दियो में पैदा होते है | भारत वर्ष में आज शोध-कार्य केवल डिग्रीयां प्राप्त करने के लिए होते है परन्तु राहुल सांकृत्यायन की शोध -कार्य डिग्रियां प्राप्त करने के लिए नहीं बल्कि अपनी जिज्ञाषा वृति शांत करने के लिए करते थे परन्तु उनकी यह जिज्ञाषा वृति कभी शांत नहीं हुई हरेक अनुसधान के पश्चात उनकी जिज्ञाषा बढती ही जाति थी | राहुल संकृत्यायन के प्रयाण के बाद वैसा जिज्ञाषा वाले व्यक्ति भारत में पैदा ही नहीं हुए है |

सन्दर्भ- सूची

1. दोहा-कोश - सरहपाद - संपादक राहुल सांकृत्यायन - भूमिका पृष्ठ -1
2. दोहा-कोश - सरहपाद - संपादक राहुल सांकृत्यायन - भूमिका पृष्ठ -1
3. दोहा-कोश - सरहपाद - संपादक राहुल सांकृत्यायन - भूमिका पृष्ठ -3

4. दोहा-कोश - सरहपाद - संपादक राहुल सांकृत्यायन - भूमिका पृष्ठ -4
5. दोहा-कोश - सरहपाद - संपादक राहुल सांकृत्यायन - भूमिका पृष्ठ -10